Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 4 | ISSN : 2581-6306

वैदिक वाङ्मय में शिव की अवधारणा : एक अध्ययन

दिनेश कुमार मौर्य (शोधच्छात्र)
संस्कृत विभाग
दी0द0उ0गो0वि0वि0 गोरखपुर

शोध आलेख सार– विश्वव्यापी भाश्वत नियमों को 'ऋत' कहते है। 'ऋततत्त्व' ही संसार का संचालन और नियन्त्रण करते हैं। सूर्य, चन्द्र, ब्रह्माण्ड सहित समस्त संसार ऋततत्व के नियन्त्रण में हैं। वैदिक युग से लेकर आज तक हमें शिव भाब्द के अनेक पर्यायवाची भाब्द मिले है। वैदिक संहिताओं एवं ब्राह्मणग्रन्थों और उपनिशद में रूद्र के विकास की स्वरूप का जो परम्परा हमे मिलती है वह एक समान ही है।

मुख्य शब्द– ऋत, शिव, वैदिक, सूर्य, चन्द्र, ब्रह्माण्ड, रूद्र।

विश्वव्यापी भाश्वत नियमों को 'ऋत' कहते है। 'ऋततत्त्व' ही संसार का संचालन और नियन्त्रण करते हैं। सूर्य, चन्द्र, ब्रह्माण्ड सहित समस्त संसार ऋततत्व के नियन्त्रण में हैं। इस ऋत तत्व के दो रूप हैं। 1.पालक 2. संहारक। प्राकृतिक नियमों के अनुकूलन चलने पर वे उसके पोशक एवं रक्षक होते है। इसके विपरीत चलने पर वे उसके नाश्क और संहाकर हैं। इसी को आधार मानकर पालक या रक्षक तत्त्व को शिव या भांकर कहते हैं। संहारक तत्त्व को 'रूद्र' कहते है। ये एक ही भाक्ति के दो विभिन्न रूप हैं।

'शिव' भाब्द की दो प्रकार से व्युत्पत्ति हुई हैं। अदादिगण के 'भी' धातु से जिसका अर्थ होता है 'शयन करना' जिसमें सब कुछ 'शयन' करता है वह शिव है।

दिवादिगण 'शो' धातु से (शयति पापम्–शो+वन्) जिसका अर्थ होता है 'दुर्बल कर देना' जो सब दुःखो और पापों को दुर्बल कर देता है। वह शिव है। ये दोनो 'अर्थ' 'शिव' भाब्द में निहित है। शिव सब दृश्टि का अधिश्ठान है और वह परम कल्याणकारी भी है जो अपने अनुग्रह से सब जीवों का उद्धार करता है वह तात्त्विक और आध्यात्मिक दोनों दृश्टियों से सबका मूल है। भोग भी उसी से होता है। मोक्ष भी उसी से होता है।[1]

वैदिक युग से लेकर आज तक हमें शिव भाब्द के अनेक पर्यायवाची भाब्द मिले है। रूद्र भाब्द भी शिव का पर्यायवाची है। शिव–तत्त्व के प्रचारक 'रूद्र' का भाब्दिक अर्थ उसकी विकास परम्परा एवं विश्लेशण का ज्ञान हमें वेदों से ही प्राप्त होते है। अतः हमे वैदिक संहिताओं में शिव के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसके पर्यायवाची भाब्द 'रूद्र' के विशय में जानकारी प्राप्त होती है।
वैदिक व्याख्याकारों के अनुसार 'रूद्र रोदने' (क्रन्दन करना) से व्युत्पत्ति हुई है और रूद्र का अर्थ है क्रन्दन करने वाला। [2]

'रूद्र' सम्भवतः प्राचीनकाल में झंझावत के भीशण रव का व्यंजक था, किन्तु अग्नि का रव भी इसी के समान होता है, अतः झंझावत और अग्नि दोनों के संयोग से क्रोध और विनाश का यह देवता रूद्र बना। आचार्य सायण ने रूद्र देव की स्वरूपाख्या दो रूपों में प्रस्तुत की है –

1. रोदयति सर्वम् अन्तकाल इति रूद्र :।
2. यद्वा रूद्र : दुःख हेतुर्वा तस्य द्रावको देवो रूद्र परमेशॅवर :।

रूद्र को सामान्यतः झंझावत का देवता माना जाता है; किन्तु इनका अस्त्र दुर्भावनापूर्ण से प्रयुक्त होता है, जबकि इन्द्र का अस्त्र उनके स्तोताओं के भात्रुओं पर ही लक्षित होता है अतः सम्भवतः रूद्र विद्युत रूप में झंझावत के नही वरन् विद्युत के माध्यम से उनके हानिकारक पक्ष का ही प्रतिनिधित्व करते थे। क्रोध निवारण स्तुतियों ने ही रूद्र के लिये कल्याणकारी (शिॅव) उपाधि को जन्म दिया, जो वैदिकोत्तर मिथक में 'रूद्र' का ऐतिहासिक उत्तराधिकारी का नियमित नाम बन गया।[3]

वेदों में रूद्र के लिए अनेक भाब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे–रूद्र, शिॅव, भव, भार्व, भांकर, पशुपति, प्रथम भिशक् आदि। ये नाम विभिन्न गुणों के आधार पर या रूलाने के आधार पर रूद्र (रूलाने वाला) नाम है। संसार के कर्ता होने के आधार पर 'भव' (स्रश्टा, उत्पादक) नाम पड़ा। दंड देना दुःख देना, संहार करना आदि अर्थो के आधार पर 'शॅर्व' नाम पड़ा। जीव–जगत् या पशु–जगत् के पालन के आधार पर 'पशुपति', सृश्टि के प्रथम वैद्य होने के आधार पर 'प्रथम भिशक्' नाम पड़ा।

शिॅवतत्त्व के प्रचारक 'रूद्र' का भााब्दिक अर्थ उसकी विकास परम्परा एवं स्वरूप विशॅलेशण गुण–कथन उपासनादि का ज्ञान हमें वेदों से ही होता है। वैदिक साहित्य के प्राथमिक ग्रन्थ ऋग्वेद में शिॅव के स्वरूप की गवेशणा बड़े ही अनुबन्धित ढंग से की गयी है। शिॅवरूप की अर्थात्मक एवं अवसरात्मक विवेचना का यह प्रथम आधार है। ऋग्वेद में प्राप्त स्तुतियों के आधार पर रूद्र के दो रूप का विवरण प्राप्त होता है। एक रूप में इन्हें भयंकर तथा द्वितीय में मंगलकारी माना गया है।

मंगलमयी भावनाओं का प्रसार अमंगलकारी तत्वों के विनश्टीकरण बिना संभव नही है। सम्भवतः इसी भाव सत्यता में रूद्र के विध्वसंक एवं मंगलमय रूपों की कल्पना की गयी है। रूद्र का संगमन नाम उसकी वेशॅ–भूशा और वर्ण सामान्यतः उनके क्रूर भयंकर स्वरूप आदि के आधार पर विद्वत वर्ग ने उन्हें झंझावत का प्रतीक माना है। मैक्डानल ने– 'विशुद्ध' झंझावत की अपेक्षा झंझावत के विध्वसंक–विनाशॅकारी विद्युताग्नि का, भण्डारकर ने 'प्रकृति की विनाशॅकारी भाक्तियों का; विल्सन ने 'अग्नि तथा इन्द्र का कीथ ने मैक्डालन के विचार का समर्थन करते हुए विध्वंसक रूप का प्रतीक तथा ओल्डर ने 'पवन के साथ विचरती हुई मृत आत्माओ का सरदार माना हैं।''[4]

इस रूप में इनका एक नाम वज्रधारी तथा इनके वज्रों का नाम 'गोध्न' 'क्षयद्वीर' बताया गया है।
इमा रूद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहेमतीः।
यथा भामसद् द्विपदे चतुश्पदे विशॅवं पुश्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्।।[5]
आरे तें गोध्नमुत पुरुशधं क्षयद्वीर सुम्नमस्ते ते अस्तु।
मृळा च नो अधि च ब्रूहि देवाधां च नः भार्म यच्छ द्विवर्हाः।।[6]

रूद्र के विध्वंसक रूप के विशॅलेशण से इनका जो प्राकृतिक रूप परिलक्षित होता है वह घनघोर घटाटोप, गर्जन–तर्जनमयी वर्शा मे मेघ गर्जन का है ऋग्वेद में रूद्र का वर्ण वभ्रुशॅवेत एवं सुनहला वर्णित है मेधों में लपलपाती हुई विद्युत के भी ये सब रंग है। रूद्र के हाथ तथा बाहू है।

अर्हन्विभर्शि सायंकानि धन्वार्हन्निश्कं यजत विशॅवरूपम्।
अर्हन्निदं दयसे विशॅवमभ्वं न वा ओजीयो रूद्रत्वदस्ति।।[7]

इनका भारीर अत्यन्त बलिश्ठ है। उनके ओठ अत्यन्त सुन्दर है। उनके मस्तक पर बालों का एक जटाजूट है, जिसके कारण वे कर्पदी कहलाते है। रूद्र विभिन्न रूप धारण करने वाले है। तथा उनके स्थिर अंग चमकने वाले सोने के रूद्र सूक्त में उनके स्वरूप का विस्तृत वर्णन किया गया है। रूद्र के मुख, चक्षु, त्वक्, अङ्ग, उदर, जिह्वा, तथा दाँतों का उल्लेख किया गया है।

हे पशुपालक, भवदेव, आपके मुख, आँखों त्वचा और नील–पीत आदि वर्ण के लिए प्रणाम है। आपकी समतायुक्त दृश्टि और पृश्ठ भाग के लिए नमस्कार।

मुखाय ते पशुपते यानि चंक्षूशि ते भव।

त्वचे रूपाय संदृशे प्रतवीचीनाय ते नमः।।[8]

नील केशधारी, सहस्त्र नेत्रयुक्त, तीव्रगति वाले, अर्द्धसेना के विनाशक रूद्रदेव से हम कभी पीड़ित न हो।

अस्त्र नीलशिखण्डेन सहस्त्राक्षेण वाजिना।

रूद्रेणार्धकधातिनी तेन मा समरामहि।।[9]
उनके सहस्त्र नेत्र है उनकी गर्दन का रंग नीला परन्तु उनक कण्ठ उज्ज्वल रंग का हैं।
नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्य वो नमो भवाय च

रूद्राय च नमः भार्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च।[10]

उनके माथे पर जटाजूट के वर्णन के साथ ही साथ कभी–कभी मुण्डित केश भी कहे गये है। सहस्त्र चक्षुरूप तथा भात धनुर्धारी समस्त प्राणियों में व्याप्त विश्णुरूप, तृप्ति प्रदान करने वाला मेघरूप बाण धारण करने वाले रूद्ररूप कहा गया है।

नमः कपर्दिन च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च भातधन्वने

च नमो गिरिशाय च शिपिविश्टाय च नमो मीढुश्टमाय चेशुमते च।[11]

ऋग्वेद के उत्तर भाग के एक सूक्त में रूद्र को 'केशी' के साथ विशपान करते हुए बताया गया है सायणाचार्य ने लक्षणा के आधार पर इसका तात्पर्य 'केशों य किरणों वाला कहा है। 'केशी' का अर्थ सूर्य भी है केशी केश रशमयः।[12]

इन्हें भीम, 'कवि और प्रभूत जगत का ईशान भी कहा गया है

स्थिरेभिरङ्गैः पुरुरूप उग्रो बभ्रुः भाुक्रेभिः पिपिशेहिरण्यैः।
ईशानादस्य भुवनस्य भूरेर्न वा उ योशद्रुद्रादसूर्यम्।।[13]

इन भाब्दों में रूद्र का सोम्य रूप प्रतिविम्बत है, जो शिवतत्त्व का द्योतक है। रूद्र भाक्तिशाली, जलप्रदायक है अतः गुणानुकूल नाम सार्थक है।

क्वश्स्य ते रूद्र ळयाकुर्हस्तो यो अस्ति भेशजो जलाशः।
अपभर्ता रपसो दैव्यस्याभी नु मा वृशभ चक्षमीथाः।।[14]

जहाँ रूद्र का उग्र रूप जीवन संहर्ता बन जाता है वही इनका सौम्य रूप जीवन–दायक, जीवन–संरक्षक रूप भी लक्षित है। इसीलि रूद्र को ईशवर का प्रतीक मानकर आराधना की गयी है। रूद्र का महाभिशक उपाधि सम्भवतः इस अर्थ का द्योतक है कि वर्शाकाल में रूद्र का स्वरूप भाक्तिशाली होने से औशधियों की अत्याधिक उपज होती है। वायुमण्डल स्वच्छ हो जाता है और समस्त जड़–चेतन में नव–जीवन का संचार होता है। शिव भाब्द का तात्पर्य 'सत्' 'मंगल' 'कल्याणप्रद' और 'भद्र' है यह शिव की बीज रूप में जगत् के सभी रूपों में वर्तमान रहता है। इसी रूप में रूद्र को जगत् जनक स्वीकार किया जाता है।

रूद्र के भाुभ उपचारों से स्तोता भात्शीत ऋतुओं तक जीवित रहने की आशा करते है इस सम्बन्ध में रूद्र को दो उपाधियों से विभूशित किया जाता है यथा 'जलाश' उपचार करने वाला तथा 'जलाश भेशज' उपशामक।

गाथपतिं मेधपतिं रूद्रं जलाशभेशजम्।
तच्छयो : सुम्नमीमहे रूद्रं जलाशभेशजम्।।[15]

रूद्र जलाशभेशज नीलशिखण्ड कर्मकृत।

प्राशं प्रतिप्राशो जह्मरसान्कृश्वोशधे ।।[16]

?यजुर्वेद में रूद्र के नामों का शिवत्त्व की दिशा में काफी कुछ विकास हुआ है। यहाँ अनेकत्व में एकत्त्व का प्रतिबिम्ब दिखायी देता है। इस वेद में रूद्र के आतंककारी रूपों का परिवर्तन हुआ है यहाँ हमें रूद्र का क्रोधी रूप दिखायी देता है और इस क्रोधी रूप का वन्दन उनके बाणो का वन्दन व बरहुओं को नमस्कार ऐसा भी मितला है।

नमस्ते रूद्र मन्यव उतो त इशवे नमः।
वा हुभ्यामुत ते नम :।।[17]

पिनाकी, त्र्यम्बक आदि नाम रूद्र के मूल रूप के परिचायक है इसके अतिरिक्त हमें रूद्र के प्रशंसासूचक विशेशण स्वास्थप्रद, भेशजप्रदाता, देवचिकित्सक, पशुपति आदि है। रूद्र देव के समान स्वभाव वाले वैद्य अशिवनी कुमारो और देवी सरस्वती ने पृथ्वी के ऊपर सोम को स्थापित करते हुए इन्द्रदेव के विराट भारीर की रचना को परिपूर्ण किया। वह रचना, हाड़, मज्जा और परिपक्व औशधि रसों से निर्मित उत्तम शिल्पी के तुल्य निर्माण का परिचय देता है।

तदश्विना भिशजा रूद्रवर्तनी सरस्वती वयति पेशो अन्तरम्।
अस्थि मज्जांन मासरैः कारोतेरण दधतो गवां त्वचि।।[18]

कृश्ण यजुर्वेद एवं भ्युक्ल यजुर्वेद के त्र्यम्बक एवं भातरूद्रिय सूक्तों में सबसे विशिश्ट बात रूद्र के नये रूप के दर्शन की है यहाँ अम्बिका नाम की स्त्री देवता के साथ इनका भगिनी सम्पर्क दिखाय गया है। मूशक नाम के विशिश्ट वाहन का संकेत है। कृत्तिवास नाम से रूद्र को चर्म वस्त्रधारी सिद्ध किया गया है। यजुर्वेद के भात–रूद्रीय सूक्त में विस्तार पूर्वक शिव नाम से उस परमात्मा की स्तुति की गयी है।

नमः भांभवाय च मयोभवाय च।
नमः भांकराय च मयस्कराय च।
नमः शिवाय च शिवतराय च।[19]

इस वेद में रूद्र की सबसे बड़ी विशेशता यह है कि यहाँ वर्णित रूद्र वैदिक देव समूह के श्रेश्ठ देवता न रहकर जन–सामान्य के आस्था के आधार बन गये। यहाँ प्राणिवर्ग के साथ रूद्र का अप्रत्यक्ष सम्बन्ध दर्शाया गया है। भूत पिशाच आदि से रक्षार्थ विविध मंत्र बताये गये है तथा औशधियों की प्राप्ति हेतु प्रार्थना की गयी है।

रूद्र की मुक्तिदाता के रूप में प्रार्थना की गयी है। सुगन्ध युक्त तथा अन्नादि की पुश्टि को बढ़ाने वाले त्रिनेत्रशिव का हम भजन करते है। हे त्रयम्बक! पके हुए खरबूजे के समान हम मृत्यु बन्धन से छूट जाये। परन्तु अमृत से नही।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धितं पुश्टिवर्धनम्। उर्वारूकमिव
बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। त्रयम्बक यजामहे सुगन्धिं
पतिवेदनम्। उर्वारूकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः।। [20]

ऋग्वेदीय रूद्र का गुण आत्मशक्ति एवं प्राकृतिक भाक्तियों के उन्मेश से जीवन को जीतना था, किन्तु यहाँ आकर रूद्र का विशेश गुण आतंककारी रूप के प्रभाव से मधुर सौम्य आकर्शक रूप की महिमा व्यक्त करना है, तथा जनसामान्य से मिलकर एक नये आदर्श की सृश्टि करना है।

ऋग्वेद, यजुर्वेद की भाँति ही अथर्ववेद में भी रूद्र के नाना रूप प्राप्ति होते है। यहाँ भी पहले जैसा ही मन्त्रदाता, सहस्राक्ष, व्युतिकेश आदि के द्वारा विभिन्न रूपों में रूद्र की पूजा हुई है। अथर्ववेद में रूद्र का पुरूश विधरूप अधिक विस्तृत हुआ है। यहाँ रूद्र वैदिक देवता

समूह के श्रेश्ठ देव न रहकर जन सामान्य के आस्था के श्रेश्ठ देव बन गये हैं। इस वेद में प्राणिमात्र के साथ उनका अप्रत्यक्ष सम्बन्ध दिखाया गया है। अर्थववेद में वर्णित शिव का स्वरूप भूत–प्रेत आदि से रक्षार्थ विविध मन्त्रों में आया है। तथा उनकी औशधियों के उपलब्ध हेतु प्रार्थना की गयी है। प्रभु से उपदिश्ट वेदज्ञान को क्रिया में अनूदित करने पर हम मुक्त हो जाते है। भवरोग का औशध यह वेदज्ञान ही है।

इदमिद्धा उ भेशजमिंद रूद्रस्य भेशजम्।
येनेशुमेकतेजनां भातशील्यामब्रवत्।।[21]

अथर्ववेद में रूद्र के विध्वसंक रूप पर अधिक प्रकाश डाला गया है और कहा गया है कि रूद्र का 'शर' विशधर होता है, उससे व्याधियाँ फैलती है और प्राणिमात्र उससे भयभीत होते है। अथर्ववेद में शिव के पौराणिक रूप का आधार मिलता है। इस वेद में 'भव' एवं 'भार्व' रूद्र के नाम है। जो हमे इस बात की सूचना देते है कि प्रवाह में रूद्र के साथ छोटे–छोटे देवताओं का तादत्म्य हो जाता है। युद्ध मे अस्त्र भास्त्रों में घायल भारीर को स्वस्थ करने के लिए भारीर में रह गये बाण आदि को निकाल फेंकने की व्यवस्था अत्यन्त आवशयक है।

यां ते रूद्र इशुमास्यदङ्गेभ्यों ह्रदयाय च।
इदं तामद्य त्वद्वयं विशूचीं वि वृहामसि।।[22]

रूद्र का अथर्ववेद में पर्याप्त विकास हुआ है। यहाँ सौम्य और भयंकर, लास्य तथा ताण्डव दोनो ही रूपों में रूद्र आकर्शक तथा प्रकम्पित कर देने वाले सिद्ध हुए है, वेदों में उल्लिखित रूद्र अथवा शिव के विविध नामों, विशेशणो तथा रूपों के साथ उनके गुण भी बताये गये है कहीं–कहीं इन्हे दिन के अभिमानी, मित्रदेवता, रात्रि के अभिमानी वरुण देवता, परम ऐशवर्य सम्पन्न स्वर्ग के अधिपति देवराज इन्द्र ये सब मुझको अनुग्रह करने योग्य समझे, विशव का पोशण करने वाले ये मित्र (सूर्य आदि) देवता मुझ तेज चाहने वाले को अभिलशित तेज से संयुक्त करे। स्नेह, निर्द्वेशता, जितेन्द्रियता व नीरोगता की भावनाएँ मुझे सबल बनाएँ। सूर्यादि देवों के सम्पर्क में मेरा जीवन तेजस्वी बनें।

मित्रस्व वरूणशचेन्द्रो रूद्रशिव चेततुः।
देवासो विशवधायसस्ते माऽजन्तु र्क्वसा।।[23]

अथर्ववेद में रूद्र का प्रधान गुण प्राकृतिक प्रकीणों (आपदाओं) को भान्त कर एक अप्रतिम भाक्ति के रूप में सभी व्यक्तियों को आत्म–सात् कर लेना है। अब रूद्रोपासना देवाधिपत्य महादेव के रूप में की जाती है। रूद्र को अधिश्ठाता के रूप में भी देखा जाता हैं।

भांकर का ही नाम विशेश अवस्था में रूद्र के रूप में ग्रहण किया जाता है। वैदिक संहिताओं में रूद्र देव की आराधना दोनों ही रूपों में की गयी है। सर्वप्रथम सृश्टा के रूप में तदन्तर संहारक के रूप में।

हें रूद्रत्वं संह्रतिसमये विशवसंहरवार्थ धनुः विभर्शि।[24]

'शिव' उपाधि अथर्ववेद तक किसी अन्य देवता की विशिश्टता नही बन सकी है।

अतः उग्र रूप के हेतु से जो देव 'रूद्र' है; वे ही जगत् के मंगल साधन करने के कारण 'शिव' है। जो रूद्र है, वही शिव है, भवेताशवतरोपनिशद में रूद्र का नाम शिव बताया है, उन्हें ही सृश्टा ब्रह्म, परमात्मा के रूप में उपास्य माना गया है।

एको हि रूद्रों न द्वितीयाय तस्थु–
र्य इमाँल्लोकानीशत ईशनीभिः।
प्रत्यड् जनांस्तिश्ठति संचुकोचान्तकाले
संसृज्य विशवा भुवनानि गोपा :।[25]

वैदिक संहिताओं एवं ब्राह्मणग्रन्थों और उपनिशद में रूद्र के विकास की स्वरूप का जो परम्परा हमे मिलती है वह एक समान ही है। कहीं–कहीं इनके रूप और नाम–भेदों में थोड़ा अन्तर हो गया है, किन्तु सबका लक्ष्य एक ही है

सन्दर्भ –ग्रन्थ सूची

1. प्रत्याभिज्ञाहृदयम् – जयदेव सिंह
2. तैत्तिरीय संहिता – 1.5.1.1
   भातपथ ब्राह्मण – 6.1.3.10
3. वैदिक मैथोलाजी – मैक्डानल पृ0 – 145
4. भौवमत – डॉ0 यदुवंशी – पृ0 1–2
5. ऋग्वेद – 1.114.1
6. " – 1.114.10
7. " – 2.33.10
8. अथर्ववेद – 11.2.5
9. " – 11.2.7
10. भ्युक्ल यजुर्वेद – 16.28
11. " " – 16.29
12. निरूक्त – 12.25
13. ऋग्वेद – 2.33.9
14. " – 2.33.7
15. " – 1.43.4
16. अथर्ववेद – 2.27.6
17. भ्युक्ल यजुर्वेद – 16.1
18. " – 19.82
19. " – 16.41
20. " – 3.60
21. अथर्ववेद – 6.51.1
22. " – 6.90.1
23. " – 3.22.2
24. सायण्यभाश्य ऋग्वेद – 11.2.12
25. भवेताशावतरोपनिशद् – 3.2